GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

डॉ. बालशौरि रेड्डी की कहानियों में नारी

एम. एम. ग़ौस तमीम बेग
शोध छात्र,
हिन्दी विभाग
गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान - मानित विश्वविद्यालय
गांधीग्राम, दिण्डुक्कल (जिला), तमिलनाडु
डॉ. खंदारे चंदू लक्ष्मण
असोसिएट प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान - मानित विश्वविद्यालय
गांधीग्राम, दिण्डुक्कल (जिला), तमिलनाडु

डॉ० बालशौरि रेड्डी जी हिन्दी के वरिष्ठ और अत्यंत प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में जीवन के विभिन्न पहलुओं को बहुत ही ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया है। आपकी कहानियों में पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों से संबंधित सजीव चित्र अंकित किए गए हैं।

रेड्डी जी ने अपनी कहानियों में नारी के विभिन्न रूपों को और विभिन्न संदर्भ स्थितियों में नारी की क्रिया-प्रतिक्रियाओं को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है। आपने नारी के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली ढंग से किया है। आप की कहानियों में एक ओर परंपरा का निर्वहण करनेवाली, मूल्य-मान्यताओं को अपनाकर चलनेवाली, परिवार के संचालन के लिए संघर्ष करनेवाली, गलत रास्ते में जानेवाले पति को सुधारकर सही रास्ते पर लानेवाली, अपने गाँव में शांति की स्थापना के लिए पारिवारिक संबंधों को तोड़कर आगे बढ़नेवाली नारी के सकारात्मक रूप के दर्शन होते हैं तो दूसरी ओर आधुनिकता के आकर्षण में पति की उपेक्षा करनेवाली, धन के अतिशय व्यामोह में भाई के साथ विश्वासघात

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

करनेवाली नारी के नकारात्मक रूप भी दृष्टिगोचर होते हैं। प्रस्तुत लेख में मैंने रेड्डी जी की कहानियों में चित्रित नारी के विभिन्न रूपों को और उसकी गतिविधियों को आपके सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

"वैसाखी" की महिला, परिवार के संचालन के भार को वहन करनेवाली संघर्षशील नारी के रूप में हमें दिखाई देती है। पति गैरज़िम्मेदार होने के कारण परिवार के संचालन का भार उस महिला को वहन करना पड़ता है। गैरज़िम्मेदार होने के साथ-साथ वह हमेशा पत्नी के निर्मम व्यवहार भी करता है। इसके बावजूद वह पति और बच्चों के लिए अपने को समर्पित करती है। परिवार के प्रति समर्पण और बलिदान के बदले में उसे पति का रूखा व्यवहार ही प्राप्त होता है। ऐसी स्थिति में वह पति से कहती है --

"तुम्हे शर्म ही कहाँ रही, जो चुल्लू भर पानी में डूब मरते ! वरना बीवी-बच्चों को अपनी किस्मत पर छोड़ तुम ताश खेलने, शराब पीने और रेस में रुपये फेंक देते!"

(वैसाखी-पृ.सं. 100, डॉ. बालशौरि रेड्डी की प्रतिनिधि कहानियाँ, सं० अशोक कुमार ज्योति, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली-110094)

"तुम भी कोई मर्द हो? बीवी पर हाथ चलाते तुम्हें शर्म नहीं आयी। जबसे तुमने शादी की, मेरे पीछे एक पाई भी खर्च किया? उल्टे मेरी आमदनी पर ऐश करते हो।"

(बैसाखी- पृ.सं. 100, डॉ. बालशौरि रेड्डी की प्रतिनिधि कहानियाँ, सं० अशोक कुमार ज्योति, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली-110094)

पति को वह किसीतरह सुधारना चाहती है, इसलिए समझाने के स्वर में कहती है --

"देखो मैं तुमसे लड़ना झगड़ना नहीं चाहती हूँ। मेरी कमज़ोरी और प्यार का लाभ उठाकर तुम मुझे आए दिन सताते हो। मेरी आखिरी शर्त यही है कि हम दोनों ऊपरी आमदनी रूपी

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

उप-जीविका की बैसाखी को तोड़कर आत्मविश्वास के साथ अपनी ईमानदारी और मेहनत की कमाई पर अपनी गृहस्थी की इमारत को दृढ़तर बनाने की कोशिश करेंगे।..."

(बैसाखी-पृ.इ. 100, डॉ. बालशौरि रेड्डी की प्रतिनिधि कहानियाँ सं० अशोक कुमार ज्योति, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली-110094)

"तुम्हारे अंदर सब तरह के अवगुण भरे हुए हैं। तुमने मेरे बटुए से कई बार रुपये चुराए। बच्चों ने खुद अपनी आँखों से देखा, मुझे बताया। तुम्हारी देखा-देखी बच्चे भी बिगड़ जाते तो हमारी ज़िन्दगी के सारे सपने टूट जाते। मैं उन्हीं को काबिल बनाने की लालसा में जिंदा हूँ। तुम्हारे सारे ऐब मैं छिपाकर रखती हूँ। आज तक यही सोचकर सहन करती आई हूँ कि कभी-न-कभी- तुम्हारे भीतर परिवर्तन आएगा। बच्चे बड़े होते जा रहे हैं, हमारी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती जा रही हैं।" (बैसाखी पृष्ठ सं.- 100-101)

"टूटती सीमाएँ" का नागराज बेटे की चाहत करता है, लेकिन उसे लगातार चार बेटियाँ होती हैं। चौथी बेटी गोदावरी के समय तो वह अत्यंत निराश हो जाता है। किसीतरह उसकी चाहत पूरी होती है उसके घर बेटे का जन्म होता है। बेटे अरुण को देखकर वह फूला नहीं समता। बेटे को अधिक महत्त्व देता है और बेटियों को नजरंदाज करता है। अधिक लाड़-प्यार करने से बेटा अरुण बिगड़ जाता है। व्यापार के दौरान धोखे में आकार नागराज मानसिक और आर्थिक रूप से टूटकर शिथिल पड़ जाता है। उस समय नागराज की छोटी बेटी गोदावरी गृह मंत्रालय में संयुक्त सचिव के पद पर रहती है। जब पिता की स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है तो वह तुरंत पहल करती है और पिता को संकट की स्थिति से बाहर निकालती है। बेटी गोदावरी ही स्थिति को सुधारती है। नागराज ने बेटे के मोह में पड़कर बेटियों की उपेक्षा की थी। वह अपने किये पर पछतावा करता है और कहता है --

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

"आज हम सब इस हालात में हैं तो इसका मुख्य कारण बेटी गोदावरी है। हम सब इधरउधर बिखर गए थे। गोदावरी ने पुनः हमें अपने नीड़ में पहुँचा दिया है। मुझे पुराने दिनों - की याद करते हुए लज्जा होती है कि मैंने लड़कियों के साथ अत्याचार किया और दो लड़कियों की भ्रूण हत्याएँ करवाईं। मेरी धारणा थी कि लड़कियाँ परिवार के लिए भारस्वरूप हैं और - -भेद के कारण कोई छोटा-उनके व्यक्तित्व की अवहेलना की। आज मुझे मालूम हुआ कि लिंग बड़ा नहीं होता। हमारे समाज ने परंपरा से ही कृत्रिमसीमाएँ बना रखी हैं और हमलोग अपने विवेक को खोकर उन्हीं सीमाओं की रक्षा करते आए हैं। गोदावरी ने यह प्रमाणित कर दिखाया है कि लड़कियाँ भी लड़कों से किसी भी दृष्टि से कम नहीं हैं। उनमें वह क्षमता है, जो उन्हें ऊँचाइयों तक पहुँचाने में समर्थ है। आज मुझे ये सारी सीमाएँ टूटती हुई "सी प्रतीत हो रही हैं।- यह कहकर नागराज ने अपनी पुत्री गोदावरी को गले से लगा लिया।"

(टूटती-सीमाएँ"- पृ.सं. 117, डॉ. बालशौरि रेड्डी की प्रतिनिधि कहानियाँ, सं० अशोक कुमार ज्योति, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली-110094)

"न्याय-तुला" कहानी की सुलोचना सारे गाँव को आतंकित करने वाले, मासूम महिलाओं की आबरू को लूटने वाले अत्याचारी पति को मौत के घाट उतार कर गाँव में शांतिपूर्ण वातावरण स्थापित करती है। न्यायालय में मुकदमा चलता है। गवाही न मिलने के कारण मुकदमा लंबे समय तक चलता है और फ़ैसला सुनाने में देरी होती है किसी तरह जज साहब अंतिम फ़ैसला सुनाना चाहते हैं, उससे पहले सुलोचना जज साहब के सामने वास्तविक स्थिति को प्रस्तुत करना चाहती है। भोजन के समय अनुमति प्राप्तकर वह जज से मिलती है और अपनी दयनीय स्थिति को उनके सामने प्रस्तुत करती है। --

"सुलोचना अपने ऊपर नियंत्रण करने की कोशिश करते हुए आँचल से आँसू पोंछकर बोली,—"सरकार! मैं एक अभागिन हूँ। अपनी राम कहानी सुनाऊँ तो वक्त बरबाद करने के

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

सिवाय कुछ हाथ लगनेवाला नहीं है। आप मेरे पिता-तुल्य हैं। आपने मुझे 'बेटी' कहकर संबोधित किया। इसलिए मैं आपके सामने झूठ बोलना नहीं चाहती। कोई भी बेटी अपने बाप के सामने झूठ नहीं बोल सकती। जो कुछ गुजरा है, मैं साफ-साफ बता दूँगी। फिर आप मुझे जो दंड उचित समझें, वह दें। मैं उसे खुशी से भोगने के लिए तैयार हूँ। मैं अपने बच्चों की कसम खाकर सच बताती हूँ–कोई भी औरत अपने पति का खून करना नहीं चाहेगी। यदि खून करने पर तुल जाती है तो उसके मन की व्यथा को सहानुभूतिपूर्वक समझने की कोशिश करनी चाहिए, दरअसल उस हालत में उसकी मानसिकता कैसी होगी।"

"मैं एक अच्छे घराने की बेटी और बहू भी हूँ। मेरे ससुर के जिंदा रहते हमें खूब मान-सम्मान मिला। किसी प्रकार की चिंता या समस्या न थी। मेरे ससुर के देहावसान के बाद मेरे पति के हाथ खासी अच्छी संपत्ति लगी, जिससे उनके मन की सोई हुई कामनाएँ जाग उठीं। वे विच्छृंखल हो उठे। अपनी वासना की पूर्ति करने के लिए पराये घरों की बहू-बेटियों की इज्जत लूटने लगे। डरा-धमकाकर लोगों से रुपए ऐंठने लगे। दारू पीकर गाँवों में क्या, सारे समाज में खलल डालने लगे। सब कोई उनसे डरने लगे। गुस्से में आकर वे कभी किसी को मार भी डालते थे। बेचारे ऐसे लोग दलित-वर्ग के होने के कारण अपनी आवाज सरकार के कानों तक पहुँचा नहीं पाते थे। कभी-कभार किसी स्रोत से अपनी व्यथा की कहानी सुना भी दें, तो ऐसे संदर्भों में सरकार के अफसर बहरे बन जाते थे, क्योंकि प्रशासन में अधिकांश अफसर उच्च-वर्ग अथवा उच्च-वर्णों के लोग नियत हुए होते थे।"

"मेरा पति मानव नहीं, दानव था। दानव किसी का कुछ नहीं सुनता, जो जब मन में आया, कर बैठता है। एक दिन वे मेरे मायके पहुँचे, रात का वक्त था, घर में मेरी भाभी और बच्चों के सिवाय कोई न था। मेरे पति ने चाकू दिखाकर मेरी भाभी के साथ अत्याचार किया। इस हादसे के बाद मेरी भाभी ने आत्महत्या करने की कोशिश की, लेकिन उसके बच्चों ने उसे

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

बचाया और आइंदा ऐसी हरकत न करने की कसम दिलवाई। वरना मेरी मासूम भाभी का अंत हो जाता। भाभी के उपकारों के बोझ से मैं लदी हुई हूँ। वह एक सती-साध्वी और पतिव्रता है। उस दिन से भाभी के जीवन में वैराग्य आया, वह समाज और दुनिया से घृणा करने लग गई, इस चिंता से वह घुल-घुलकर कंकाल-सी हो गई।

"सरकार! मेरे पति का व्यवहार दिन-ब-दिन उच्छृंखल होता गया। दिन-भर दारू पीकर सबसे झगड़ा मोल लेते, भद्दी गालियाँ बकते, औरतों के साथ छेड़-छाड़ करते, धनी परिवार के लोगों के घर जाकर कर्ज माँगते, न देने पर छुरी दिखाते हुए कत्ल करने की धमकी देते, बच्चे-बूढ़े, औरतें और मर्द भी उनसे तंग आ गए थे। वे कहते थे कि एक और नरकासुर इस क्षेत्र में पैदा हो गया है।"

"जब कहीं से उधार न मिलता, तो मुझे उधार माँग लाने के लिए कहते। मैं इनकार करती तो कोड़े से मारते, लात मारते, मेरा जूड़ा पकड़कर दीवार से टकरा देते, कभी मेरी जाँघ पर ब्लेड से चीरकर उसपर चूड़ियों का चूर्ण लगाकर पट्टी बाँध देते, मेरे चिल्लाने, हाहाकार करने, आह भरते देख वे अट्टहास करते, मेरे बच्चों को रोते देख उन्हें डाँटते-पीटते। कभी किसी औरत को खींचकर घर ले आते, मेरे सामने उसकी इज्जत लूटते। सरकार! मैं रौरव नरक से भी बढ़कर यातनाएँ झेलती रही। मेरी कराह सिर्फ दीवारों से टकराकर वहीं चक्कर काटती। कई बार मैंने खुदकुशी करने की कोशिश की। मेरे दो बड़े बच्चे बराबर मुझे बचाते रहे, वे मेरी छाया बनकर रक्षा करते रहे। वे कहते,–'माँ! तुम्हारे मरने पर हम राह के भिखारी बन जाएँगे।' सरकार! मैं इन बच्चों के वास्ते सबकुछ सहकर अपने दिल को पत्थर बनाए हुए थी। आप मेरे पिता के समान हैं, देखिए, मेरे बदन में कैसे घावों के निशान मेरे पति के अत्याचारों के गवाह बनकर रह गए हैं। सिगरेट जलाकर मेरे अवयवों पर रख देते। शायद जेलों में भी अपराधियों के साथ ऐसे अत्याचार नहीं होते होंगे।"

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

"मैंने भी लोगों के ताने सुनते उन्हें मार डालने का निश्चय कर लिया। इसी में मेरी और बच्चों की खैरियत थी। मेरे पति के बदलने की कोई उम्मीद न थी। एक दिन मैंने दूध में धतूरे के बीजों का चूर्ण मिलाकर अपनी बेटी के हाथ दूध भेजा, शायद उन्हें नींद लग रही थी, झट गिलास उठाकर सारा दूध गटागट पी गए। शायद उन्हें दूध की अंतिम बूँदों में थोड़ा कड़वापन लगा हो, मुझे बुलाकर बोले,–'अरी छिनाल की बेटी, कहीं तुमने दूध में कुछ मिला तो नहीं दिया। कल सवेरे मैं तुम्हारी खबर लूँगा।' ये शब्द कहकर वे सो गए। "मैं दूसरे कमरे में लौट आई। सभी बच्चों को अपने-अपने बिस्तरों पर सुलाया। आधे घंटे बाद दबे पाँव मैं अपने पति के कमरे में पहुँची। वे खर्राटे लेकर सो रहे थे। मैं रसोईघर से मसाला पीसने वाला लोढ़ा उठा लाई और अपने पति के सिरहाने खड़ी हो गई। मेरा दिल धक-धक करने लगा। हाथ काँपने लगे। अगर मैं थोड़ा विलंब करती, तो शायद मेरे हाथ से लोढ़ा छूट जाता और वे जाग पड़ते। ऐसी हालत में मेरी जान की खैर न होती। वे मुझे उसी लोढ़े से मार डालते। मेरे मरने पर मेरे बच्चे अनाथ बनकर घर से भाग जाते। न मालूम, तब उनकी क्या हालत हो जाए, इस कल्पना-मात्र से मैं सिहर उठी और न आव देखा, न ताव–लोढ़ा उठाकर ठीक अपने पति के माथे पर पूरी ताकत से दे मारा। उनके मुँह से एक चीख निकली, खून के छींटे चारों तरफ बिखर गए। उनकी आँखों की पुतलियाँ निकल आईं। उस वक्त मैं घबराई नहीं। मैंने हिम्मत से काम लिया। पानी लाकर खून के छींटे धो डाले। फर्श साफ किया। उनके कपड़े, दुपट्टे निकालकर हाँडी में डालकर ढक्कन बंद किया। फिर उनके बदन पर एक धोती लपेट दी। इस सारी घटना की खबर मैंने अपने बच्चों के कानों तक पहुँचने नहीं दी। फिर उनकी लाश घर के बाहर खींच लाई। तब चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगी। क्योंकि इधर पाँच-दस दिन से कुछ लोग मेरे पति को मारने का षड्यंत्र रच रहे थे। इसलिए मैंने सोचा कि लोग यही विश्वास करेंगे कि उनके दुश्मनों ने उन्हें मार डाला है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

"सरकार! मैंने इस हालत में अपने पति की स्वयं हत्या की। अब आप जो उचित समझें, करें।" यह कहकर सुलोचना ने अपने बदन पर लिपटी साड़ी उठाकर वे सब घाव दिखाए, जिनकी पीड़ा सहकर वह पत्थर बन गई थी।

सरकार! आप इस हत्यारिन को अगर फाँसी की सजा देते हैं, तो मुझे स्वीकार है। न्याय की तुला आपके हाथ में है। आप जैसे उसे थामेंगे, उसके पलड़े भी वैसे ही ऊँचे-नीचे होते हैं। आप न्याय के देवता हैं, लेकिन इस अंतिम घड़ी में आपको अपना पिता मानकर हाथ जोड़कर यही निवेदन करती हूँ कि मेरे बच्चे अनाथ न बनें। अब भी दस-बारह एकड़ जमीन बची पड़ी है। बंजर होती जा रही है। एक माता के मन में अपने बच्चों की चिंता के अतिरिक्त क्या होगी?" ये शब्द कहकर सुलोचना एकदम निश्चिंत हो गई। उसका चेहरा इस प्रकार निर्मल नजर आ रहा था, जैसे वर्षा के थमने के बाद आकाश निर्मल हो स्वच्छ दिखाई देता है।"

जज साहब फैसला इस प्रकार सुनाते हैं -

"चूंकि सुलोचना के द्वारा खून होने की कोई गवाही नहीं मिली है और जूरी के सदस्यों का मानना भी यही है कि सुलोचना एक उत्तम चरित्र वाली नारी है। वह किसी भी स्थिति में अपने पति की हत्या नहीं कर सकती। अतः गवाहों के अभाव में यह मुकदमा खारिज किया जा रहा है और सुलोचना को मुक्त किया जा रहा है।"

(न्याय-तुला पृ.सं. -49 से 53 तक, डॉ. बालशौरि रेड्डी की प्रतिनिधि कहानियाँ, सं० अशोक कुमार ज्योति, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली-110094)

'अपना अपना राग' कहानी की राजनारायण की पत्नी आधुनिकता के आकर्षण में अपनी जिम्मेदारी को भूलकर नीरस जीवन बितानेवाली नारी के रूप में अपना परिचय देती है। कुत्ते को पालना, उसकी देखभाल करना, उसके प्रति भावुक होना आधुनिकता के प्रतीक के रूप में वह देखने लगती है। कुत्ते की चाहत में वह पति तक को नजरंदाज़ करने लगती है। पति का

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

स्वास्थ्य बिगड़ता है तो वह उसकी ओर ध्यान नहीं देती है, लेकिन कुत्ते की चिंता करने लगती है। राजनारायण की स्थिति गंभीर होती है। बेटी कमलू डरकर घबराने लगती है लेकिन उसका राजनारायण की पत्नी पर कोई असर नहीं पड़ता है।

"मम्मी, कुत्ते को आराम से डॉक्टर को दिखा सकते हैं। पिताजी बहुत परेशान हैं। उनकी तबियत बहुत खराब हो गई है। उनकी हालत देख मुझे डर लगता है।"

"कमलू बेटी ! तुम घबराती क्यों हो? उनके बारे में तुम कुछ नहीं जानती। बस, उन्हें कुछ हुआ नहीं कि वे हो-हंगामा मचाने लगते हैं। इस पिल्ले को देखो न, कैसे काँप रहा है। इसका बदन सिकुड़ गया है। बेचारा यह बेज़बान जानवर अपना दुखड़ा कैसे किसी को सुना सकता है।"

(अपना अपना राग-पृ. सं. 33, डॉ. बालशौरि रेड्डी की प्रतिनिधि कहानियाँ, सं० अशोक कुमार ज्योति, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली-110094)

“दिल का काँटा" कहानी की रमा धन के व्यामोह में अपने भाई की संपत्ति को हड़पने के लिए संकट की स्थिति में भाई से झूठ बोलनेवाली बहन के रूप में दिखाई देती है। सोमसुंदर अवकाश प्राप्त मुख्य अभियंता हैं जो अपनी ईमानदारी के लिए मशहूर थे। अपने कार्यकाल में अपने अधीनस्त अभियंताओं पर उन्होंने भ्रष्टाचार के आरोप में कठिन दंड दिलवाए थे और गुणवत्ता में कमी करनेवाले ठेकेदारों के नाम फेरिस्त से कटवाए थे। अब वे लोग उनसे बदला लेना चाहते हैं। इसलिए आयकर अधिकारियों को गलत सूचना और प्रलोभन देकर सोमसुंदर के घर पर छापा मारने के लिए उकसाते हैं। आयकर के अधिकारियों को इनके यहाँ कुछ भी अवैध संपत्ति नहीं मिलती है। लेकिन सोमसुंदर की बीमार पत्नी के स्वास्थ्य पर और स्वयं सोमसुंदर पर इसका प्रभाव पड़ता है। पत्नी की स्थिति गंभीर होजाती है और उसका देहांत हो जाता है। घर पर छापा मारने के कारण विचलित सोमसुंदर पर पत्नी की मृत्यु एक बिजली के

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

समान गिरती है और उनको दिल का दौरा पड़ जाता है। इलाज के दौरान अस्पताल में भर्ती किए गए सोमसुंदर के साथ बहन रमादेवी रहती है। रमादेवी दहेज में मिली अपनी सत्ताईस एकड़ ज़मीन को भाई सोमसुंदर को बेच देती है। सोमसुंदर पैसा रमा को उसी समय देते हैं, लेकिन रजिस्ट्री नहीं कराते हैं क्यों कि वे ज़मीन अपने बेटों के नाम पर करना चाहते हैं। उनके दो बेटे एक मुंबई में और एक दिल्ली में रहते हैं, सोमसुंदर उनकी प्रतीक्षा करते हैं इसलए ज़मीन की रजिस्ट्री नहीं करवाई थी। अब बेटे उनको देखने के लिए घर आए हैं, इसलए वे बहन से कहते हैं --

"बहिन! वह सत्ताईस एकड़ जमीन मेरे बेटों के नाम पर रजिस्ट्री करवा दो। वे दोनों आए हुए हैं। कल सुबह यह काम अवश्य पूरा करना और अपनी भाभी की सोने की जो करधनी ले गई थी, उसे मेरी बड़ी बहू को दे देना। मैंने उसे आश्वासन दिया है।"

(दिल का कांटा -पृ. सं. 87, डॉ. बालशौरि रेड्डी की प्रतिनिधि कहानियाँ, सं० अशोक कुमार ज्योति, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली-110094)

भाई की स्थिति को देखकर रमादेवी अनुचित ढंग से ज़मीन को हड़पना चाहती है। वह भाई से कहती है -

"भैया! आप यह क्या कह रहे हैं? वह जमीन तो आपने मुझे दहेज में दी थी। बहन को दी गई जायजाद कहीं कोई वापस भी लेता है! मैंने तो ऐसा कहीं नहीं सुना! वह करधनी जो है, भाभी ने मुझे दी थी। इसलिए मैंने उसे अपनी बेटी को शादी के समय उपहार में दे दी।"

"रमा! मैंने तो तुम्हें जमीन का दाम दे दिया था। इसलिए या तो तुम वे रुपए वापस कर दो या जमीन मेरे पुत्र प्रताप और रमेश के नाम पर कर दो। आज उसका मूल्य लाखों में पहुँच गया है।"

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

रमा उत्तेजित होकर बोली,–"भाई साहब! मुझे मालूम नहीं था कि आप अपनी बहन के साथ भी हिसाब-किताब रखते हैं। सबलोग अपनी बहन को समय-समय पर न मालूम क्या-क्या उपहार दिया करते हैं! जमीन, मकान, गाड़ी, हीरे-जवाहरात वगैरह-वगैरह। मैंने कभी आपसे कुछ नहीं माँगा था। हर साल आपने मुझे जो कुछ दिया, उसी का बड़ा सम्मान मानकर मैंने चुपचाप ले लिया। मैंने कभी माँग नहीं की कि मुझे वह चीज़ दो, यह चीज़ दो। अब इनको भूल जाइए। समझ लीजिए, आपने ये सब मुझे दान में दिए हैं। आप सख्त बीमार हैं। न मालूम, पुनः मुझे आपके हाथों से भेंट-उपहार लेने का मौका मिले या न मिले।"

(दिल का कांटा -पृ. सं. 87 और 88, डॉ. बालशौरि रेड्डी की प्रतिनिधि कहानियाँ, सं० अशोक कुमार ज्योति, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली-110094)

"रमा की बातों से और उसके व्यवहार से सोमसुंदर के मन को गहरी ठेस पहुँचती है और वे लकवे का शिकार होकर निष्क्रिय और जड़ समान बन जाते हैं।

"रमा के मुँह से ऐसी बातें सुनकर सोमसुंदर का दिल तड़प उठा। वह कुछ कहना चाहते थे, किंतु कह नहीं पाए। कागज और कलम लाने का इशारा किया। बहन ले आई। सोमसुंदर अपने बेटों के नाम कुछ लिखने को हुए कि अचानक उनका हाथ सुन्न पड़ गया और वह इस तरह लुढ़ककर बिस्तर पर गिर गए मानो उनकी चेतना जवाब दे चुकी है।

लकवे का शिकार होकर सोमसुंदर स्थिर नेत्रों से इस तरह बहन की ओर ताकते रहे, जैसे उन्हें इस दुनिया के प्रति घृणा हो गई हो। फिर न उनके मुँह से वाणी निकली और न उनके अवयव हिलने की स्थिति में थे। वे जड़वत, विस्मयपूर्वक छत की ओर ताकते ही रह गए।"

(दिल का कांटा -पृ. सं. 88, डॉ. बालशौरि रेड्डी की प्रतिनिधि कहानियाँ, सं० अशोक कुमार ज्योति, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली-110094)

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

निष्कर्ष के रूप में मैं कहना चाहूँगा कि डॉ. बालशौरि रेड्डी जी ने अपनी कहानियों में परिवारिक मूल्य-मान्यताएं, पारिवारिक संबंध, समाजिक स्थितियाँ, परिवार और समाज में आए परिवर्तन, विशेष रूप से नारी के जीवन के विभिन्न पहलू आदि का चित्रण सहज और यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है। हिन्दी कथा साहित्य के लिए आप का योगदान अविस्मरणीय और अत्यंत प्रशंसनीय है।